सं• भ्रो०वि०/रोहतक/28-86/22129.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं र वन इण्डल्ट्रोज प्रा० लिं०, झसर रोड़, बहादुरणढ़, को श्रीमक श्रोमती सुरेश देवी मार्फत धार० एस० यादव, प्रधान भारतीय मजदूर संब रेतवे रोड़, काठ मण्डी, बहादुरणढ़ (रोहतक) तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीग्रीणक विवाद है; ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्याल विवाद को न्यायिवर्णत हेत् निर्दिश करना वाक्सोर सम्बन्ध हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विजाद प्रधिनियम, 1947, को धारा 10 को उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान को गई ग्रानित्यों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिम् चना सं० 9641-1-अप-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी प्रधिम् चना को धारा 7 के प्रधीन गठित अप न्यायालय, रोहतक को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यायितिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्धिक करते हैं जो कि उसत प्रबन्धकों तथा अपिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या उसत विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

वया श्रीमती सुरेश देवी की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

संब्धीविनित्र त्रिक्ति के स्टून्सन एग्ड इंकविनित्र के लिंक, ट्रांसकारमें विविजन, दिल्ली रोड सोनोपत के श्रामिक श्री भारत भूपण, पुत्र श्री ईश्वर सिंह 10/352 जमालपुरा सामने पास्त्री लाईवेरी सोनीपत तथा उसके प्रयन्थकों के बोच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई ग्रीग्रीगिक विवाद है:

ग्रीर चूंकि हेरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिनए, अब, घोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणी कि राज्य गान इसके द्वारा सरकारी अधित्वना सं० 9641-1-अम-78-32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधोन गठित अन न्यायानय, रोहतक को विवाद शस्त या उससे सुनंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामूजा न्यायिन गय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बोच या तो विवाद शस्त मामला है या उक्त विवाद से सुनंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है !—

क्या श्री भारत भूरण शर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

. सं श्री विवि | 40-86 | 22143 - चूंकि हरियाणा के राज्य गान की राय है कि मैं मोहन स्थिति मिलज, रोहतक के श्रमिक श्री सुष्ट पाल शर्मा, सपुत्र ज्योति प्रसाद मं. नं. 81, शुगर मिन कालोनो, रोहतक तथा उसके प्रवश्य को के बीव इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री बोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिन गंय हेनु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विश्राद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उगधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शाक्तियों का प्रयोग करते हुए हस्थिए। के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूनन निज्ञ 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवन्नर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिमूनना की धार। 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से नुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

नया श्री सुख पाल, सपुत्र श्री ज्योति प्रसाद की सेबाग्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यिंह नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं. श्रो.वि./हिसार/66-86/22150.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) कृषि विश्वविद्यालय हिसार, (2) हैड पशु विभाग उत्पादन तकनिकों कालिय आफ पशु विज्ञात कृषि विश्वविद्यालय हिसार के श्रीसक श्री राम लात मार्फत मजदूर एकता यूनियन नागारी गेंट, हिसार तथा उसके प्रवत्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

स्रोद चूंकि हरियाणा के राज्यताल विधार को खारांगेर हेरू निर्देश करना बांछ गेर समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शक्तियों का अयोंग करते हुँये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिमूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उत्ते सुनंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

स्था श्री राम लाल, पुत्र श्री पत राम की सेवांग्रीं समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस